



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	22-3-24	2	4-8

The Tribune

Farm specialists mull ways to nip pink bollworm menace

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MARCH 21

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HCU) Vice-Chancellor Professor BR Kamboj said the increasing risk of an outbreak of pink bollworm in cotton crops in the northern region of the country was a matter of growing concern for farmers and agricultural scientists.

Various stakeholders, including agriculture scientists, officials and representatives from different seed firms, gathered at the HAU to discuss the problem here today. Farmers' representatives from Haryana, Punjab and Rajasthan and other cotton-growing districts also participated in the seminar.

The VC said that to resolve the problem, they would have to take concrete steps collectively and save farmers from major financial losses. "Last year, there was a high incidence of pink bollworm. The farmers used pesticides indiscriminately, which is concerning. To control this pest, bio-



logical pesticides and other pest management measures will have to be discovered with the collective efforts of all stakeholders," he said.

Farmers are advised to refrain from keeping the branches of the harvested cotton plants in the fields as it increases the risk of carrying forward the pest to the next season. The farmers should sow only varieties which are recommended by the agricultural universities and BT-approved by May 15. They also must not mix pesticides

and fungicides, the experts said, adding that after sowing the cotton, farmers must monitor their fields and if pink bollworm infestation is noticed, take measures to control the infestation, as advised by experts.

Director of Extension Education Dr Balwan Singh Mandal presented the progress report of the work done for the management of pink bollworm through all the agricultural science centres of the university.

Dr Karmal Singh, incharge

of cotton section, discussed in detail the situation of pink bollworm outbreak in cotton crop in the state in 2023. Dr Satnam Singh, senior scientist of Punjab Agricultural University (PAU), Ludhiana, and Dr Pradeep Kumar, scientist of Rajasthan Agricultural University, Bikaner, shared information about the status of cotton and the outbreak of pink bollworm in their respective states.

Joint Director (Cotton) of Haryana Agriculture and Farmers Welfare Department

TIPS TO KEEP IN MIND

- Refrain from keeping branches of harvested plants in the fields.
- Sow only varieties which are recommended by agricultural universities and BT-approved by May 15.
- Do not mix pesticides and fungicides while spraying.
- Monitor fields continuously, if pink bollworm infestation is noticed, take measures to control it immediately.

Experts at the meeting at the HAU in Hisar on Thursday.

RP Sihag gave information about the activities carried out by the department.

Dr Rishi Kumar, Director, Central Institute for Cotton Research (CICR), Sirsa, discussed the problems of cotton and their management in North India.

Meanwhile, representatives of private seed companies also gave important suggestions regarding the control and management of pink bollworm. Farmers from different districts shared their views and experiences.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समूचार पत्र का नाम
दृष्टिकोण मासिक

दिनांक
२२.३.२५

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
२-५

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि वैज्ञानियों व किसानों का गुलाबी सुंडी प्रबंधन पर मंथन नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को रोकने को उठाने होंगे ठोस कदम: काम्बोज

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे, ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बौज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

कूलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंथाधुर कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है।

इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है।

किसान नरमा की बन्धियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई हैं तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिखिले टिप्पणी एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्धियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफ्टंदीनाशकों को मिलाकर छिड़कात न करें। किसान नरमे की बिजाई के बाद अपने खेत की फीरोमेट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएं अनुसार नियंत्रण के उपाय करें।



हिसार, हक्की के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

2023 में हुए गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी ली

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए कारों की प्राप्ति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति

के बारे में चर्चा की। पंजाब कृषि विवि के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक कपास आरपी सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीनक जारी २०२०	२२.३.२५	५	१-५

तीन राज्यों के कृषि विज्ञानियों, अधिकारियों व किसानों का गुलाबी सुडी के प्रबंधन पर मंथन

प्रो. बीआर काम्बोज बोले— सामूहिक और ठोस कदम उठाने से होगा समाधान

जगतरण संवाददाता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यालिखि सचिवालित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले बर्ष गुलाबी सुडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के ढापाओं को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे, तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बच्चियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे हांग से झाड़कर उसे



हुड़वि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज गुलाबी सुडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ मैटक करते हुए। • पीआरडी

गुलाबी सुडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

विस्तार शिक्षा निदेशक डा. वलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का रवागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डा. एसके घनरखड़ ने छन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंत्र संचालन सहायक निदेशक पौष्टि संरक्षण डा. एसएस यादव ने किया।

दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिखिले टिड़ों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बच्चियों से निकलने वाली गुलाबी सुडियों को रोका जा सकें। इसके अलावा नरमा

कपास अनुभाग के प्रभारी डा. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा कफल में गुलाबी सुडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के एविएट वैज्ञानिक डा. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि पर्यावरण कल्याण विभाग,

हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आरपी सिंहग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा के निदेशक डा. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बीटी संकर किसी की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फूटदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमा

की बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रैप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुडी का प्रकोप न जर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएनुसार नियंत्रण के उपाय करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तर उत्तरा	२२.३.२५	२	१-५

गुलाबी सुंडी पर नियंत्रण के लिए किसान 15 मई से पहले कर लें नरमा की बिजाई

एचएयू में कृषि वैज्ञानिक, किसान व बीज कंपनी प्रतिनिधियों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किया मंथन
मार्ड सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए गुलाबी सुंडी नियंत्रण पर एक दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया। मुख्य अधिकारी कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एक जुट लोकर ठोस कदम उठाने होंगे।

उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी पर नियंत्रण के लिए किसानों को 15 मई से पहले नरमा की बिजाई पूरी कर लेनी होगी। सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था। इसके



एचएयू में नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों संग बैठक करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। शैत: संस्थान

नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया। कीटनाशकों का इतना प्रयोग चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा। हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। इसके लिए सबसे पहला उपाय यही है कि किसान नरमे की बनछटियों को खेत में न रखें।

अगर रखी हुई हैं तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिकाले टिंडों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बनछटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की निरंतर निगरानी रखें।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम

से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। परियोजना निदेशक डॉ. एसके धनसंखड ने घनवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में डॉ. एसएस यादव, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतनाम सिंह, डॉ. प्रदीप कुमार, आरपी सिहांग, डॉ. ऋषि कुमार आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	२२-३-२४	२	.३-६

ਪੰਜਾਬ ਕੇਲਸਟੀ

**गुलाबी सुंडी पर नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का
प्रयोग घिंतनीय, समाधान का खोजना होगा अन्य उपाय**

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के साथ गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किया गहन मंथन

हिसार, 21 मार्च (सती): देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास/नरमा में लगातार गुलाबी सुंदरी का प्रकोप बढ़ रहा है। इससे किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों की चिंता बढ़ गई है। अगर इस पर तुरंत कावू पाने की दिशा में कदम नहीं उठाए गए तो किसानों को काफी नुकसान हो सकता है। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, किसानों एवं निवीं बीज कम्पनी धारकों ने गुलाबी सुंदरी के प्रबंधन के लिए गहन मंथन किया है।

सैमीनार में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था जिसके नियंत्रण के लिए अधिकाधिक कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामृद्धिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है।

सैमीनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुताबी सुडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तात की। कपास अन्धामा



हकूमित के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज गुलामी सुंदी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ वैतक करते हैं।

के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंदी के प्रकोप की स्थिति बारे विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंदी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहां ने विभाग द्वारा की गई मतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

भारत सरकार के खेत्रीय कपास
अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ.

ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के, प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। सैमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की। एवं सभी के सामूहिक प्रयासों हेतु प्रेरित किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस. एस. यादव ने किया।

गुलाबी सुंडी से बचने के लिए ये उपाय फैरो किसानः किसान नरमे की बन्धाटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई हैं तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे लंगा से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिखिले टिण्डों एवं सुखे कच्चे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्धाटियों से निकलने वाली गुलाबी सुडियों को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाई विरुद्धविद्यालय द्वारा अनमोदित बीटी संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फॉरेंटीनाशकों को प्रिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की पत्तिरोमाट्रप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विषेशज्ञ से बताए अनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

“उत्तरी क्षेत्र में नरमा/कपास में लगातार गुलाबी सुडी का प्रकोप बढ़ रहा है। जो किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामृद्धिक रूप से एकन्युट होकर ढोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईर मून	२२.३.२५	१	५-४

कपास/नरसा में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : कुलपति हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों व किसानों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन बारे किया गहन मंथन

हाइलाइट्स अहिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

कुलपति प्रो. काम्बोज गुरुवार को विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग



हिसार।
गुलाबी सुंडी
के बढ़ते
प्रकोप बारे
अधिकारियों
के साथ बैठक
करते हुए।

लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है।

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ.

जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस के धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में भेंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एसएस यादव ने किया।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरसा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि

विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रात में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी।

भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने-अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों के लिए प्रेरित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
रैनक ड्रिल्यून	२२-३-२५	८	३-६

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन

कपास को गुलाबी सुंडी बढ़ाने के बताए उपाय

हिसार, 21 मार्च (एप्र)

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बताएँ मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कुलपति ने कहा कि गुलाबी सुंडी



हिसार रिथित हक्कियि के कुलपति प्रो. दीआर काम्बोज अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए। एप्र

के नियंत्रण के लिए जैविक 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन कोटिनाशकों एवं फार्मुलीनाशकों को के उपायों को खोजना होगा। तभी मिलाकर छिड़काव न करें। किसान किसान को बचाया जा सकता है। नरमे को बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रैप से नियंत्रण निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि जाइकर उसे दूसरे स्थान पर रख दें। नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बीटी संकर किस्मों की

विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अंजोट समाचार	२२.३.२५	।।	५-४

कपास/नरमा में गुलाबी सुंदी का बढ़ा प्रकोप: सामूहिक व दोस फैसले से होगा समाधान: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 21 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंदी का बढ़ा प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए हमें सामूहिक रूप से एक जुट होकर घोल कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बातौर मुख्यालियि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपोस आने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंदी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधारुध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कोट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के ऊपरों को स्वोजन होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने



हृष्टवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कपास/नरमा में गुलाबी सुंदी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए। होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता। प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएं। सार रखी हुई है तो बिजाइ से पहले इन्हें अच्छे लंग से झाड़क उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिक्षिले टिण्डे एवं सुखे कचरे को नष्ट कर दें। ताकि इन बन्धुटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंदी को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाइ विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफ्दीनाशकों को मिलाकर छिकाव न करें। किसान नरमे की बिजाइ उपरांत अपने खेत की फोरोमेट्रेप से निरंतर निरामी रखें तथा गुलाबी सुंदी का

प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंदी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंदी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आरपी. सिहां ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंदी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने-अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। सेमिनार के समाप्त पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंदी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों द्वारा प्रेरित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सन्ध मुद्दे	२२.३.२५	३	५-४

कृषि वैज्ञानिकों ने प्रबंधन हेतु किया गहन मंथन, किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप, किसान उठाएं ठोस कदम

डॉ. सद्योप सिंहमार।

उत्तर भारत में कपास/नरमा एक महत्वपूर्ण फसल है। इस फसल से जहां देश में कारडा उत्थान को बल मिलता है तो वही किसानों की भी आय में भी अद्वैती होती है। लोकिन पिछले कुछ वर्षों से देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का प्रकोप लगातार बढ़ता जा रहा है, जो किसानों के लिए ही नहीं कृषि वैज्ञानिकों के लिए भी चिंता का सबव बन रहा है।

गुलाबी सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में दैशभर से जुटे कृषि वैज्ञानिकों ने गहन मंथन किया। कृषि वैज्ञानिकों से हकीकि के कुलपति प्रोफेसर बीआर कामवाजे ने आज्ञान करते हुए कहा कि इसके समाधान के लिए सामूहिक रूप से एक जुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

इस मेरिनार में कपास उपाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी आग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके



नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है।

कीटनाशकों का प्रयोग हानिकारक, खोजने होंगे जैविक उपाय

गुलाबी सुंडी के कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे को मिलाकर छिड़काव न करें।

बन्धुटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो विजाई से पहले इने अच्छे हंग में झाड़का। उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्धुटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडीयों को रोका जा सकें। इसके अलावा नरमा की विजाई विश्वविद्यालय हारा अनुप्रादित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फसूलनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें।

फीरोझोट्रैप से निरंतर निगरानी रखें किसान

■ किसान नरमे की विजाई उपरान्त अपने खेत को फीरोझोट्रैप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कुर्कि विशेषज्ञ से बताएनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

■ विस्तार लिखा निदेशक डॉ. बलबान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु एक कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। कपास अनुभाव के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं सरजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की

जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहान ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

कपास की अन्य समस्याओं पर हुई विस्तृत वर्द्धा

भारत सरकार के श्रेष्ठीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिया। अलग-अलग जिलों से एआई किसानों ने अपने-अपने विद्यालय एवं अनुबंध साझा किया।

सेमिनार के समाप्तन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भवित्य की रणनीति नैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों हेतु प्रेरित किया। भवित्य में समीक्षित गुलाबी सुंडी के प्रकोप को देखते हुए किसानों की भी कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार ही कृषि कार्य निपटाना चाहिए, ताकि उन्हें किसी भी प्रकार की समस्या का समाना न करना पड़े।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रचार पत्र का नाम
प्र० २०२४/२०२५

दिनांक
21.03.2024

पृष्ठ संख्या
--

कॉलम
--

कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप - सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

चिटाग टाइप्प न्यूज

हिसार। चौधरी चरण मिह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कूलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजूट होकर ठोस कदम उठाने होंगे जोकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वैश्वविद्यालय में हरियाणा, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व विज्ञानी वैज्ञानिकों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बलौर मुख्यालय मंडीधर घर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

कूलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी वा प्रकोप उत्तर रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस क्षेत्र के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को नोडना होगा तथा हितधारकों व सभी मिलकर सामूहिक प्रयास करने

होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बनहटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो विजाई से पहले इन्हें आख्छे छंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधिष्ठिते हिण्ठों एवं सूखे कच्छे को नहु कर दें ताकि इन बनहटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोक जा सके। इसका अलावा नरमा की विजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बीटी सेक्टर किसी को 15 मई तक पूरी करे एवं कीटनाशकों एवं फफ्टीनाशकों को मिलकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की विजाई उत्तरान अपने खेत को फीरोमाट्रेप से नियंत्रण किसानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नवर आपे पर निकलते एवं कृषि विशेषज्ञ से बताएन्मार नियंत्रण के उपाय करें।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

बैठक में विभाग शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान मिह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी का प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ.

ओलगाम जमा ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धनवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में यंत्र संचालन सहायक निदेशक पीछे सरेक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया। कथाम अनुभाग के प्रभारी डॉ. जरमल मिह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तरपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने अपने प्रांत में काषाय की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी का प्रकोप की जानकारी दी। कृषि यंत्र किसान बलवान विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहांग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

धारत सरकार के लेवीय कायाम अनुसंधान केंद्र, विभाग के निदेशक डॉ. गृष्ण कुमार ने उत्तर भारत में काषाय की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। उन्होंने दीर्घ नियंत्री बीज केन्द्रियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.03.2024	--	--

अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को खाने व रहने की चिंता न हो, ऐसी भारत की परिकल्पना : प्रो. काम्होज



प्राचीन भारतीय संस्कृति

प्रियांका, 23 वर्षीय; भवत मो-2047
जा किंवदि इन्हें बहुत ज़्यादा नी
चे अंदरूनी चाल की वे प्रयत्न सुनिश्चित होते
जैसे खाली, गोलों के उम्बे वाली छाप
में गोलों की इकट्ठिता एवं एक जैसे
दृश्यमान रूप के विवरण भी उपलब्ध न
होते। यहाँ एक अन्य विकल्प का
विवरण है। यहाँ तक कि यहाँ विकल्प
में विवरण दिया गया है। ये विवरण
पर्याप्ती व्यापक नहीं होती है, किंतु यह
विवरणका अधिकांश विवरण है, जो कि
विवरणका अधिकांश है, जो कि
विवरणका अधिकांश है, जो कि
विवरणका अधिकांश है, जो कि

मुख्यमंत्री ने कहा, वर्तमान में साधारण की भवित्व की 2047 तक विकासित जनते के लिए और सामाजिक कानूनों में देश के बुनियादी विधियां बढ़ाव देने के लिए इसका अधिकार अपनाया गया है। इसके अलावा इसका उपयोग दूसरी विधियां बढ़ाव देने के लिए भी किया जा सकता है।

विश्वासीयों ने समर्पित कर दिए थे। यह एक अद्भुत विचार है कि यह एक लोकोपकारक विचार है।

जब ये लोग ने जीत ली तो वह पर्याप्त संवेदन ले लिया, जिसने उनके दृष्टि विषय पर पूछा था।
— बहुत अच्छी बात है। यद्यपि इसका प्रारम्भिक अवसर लालकरण था, लेकिन जो लाभ है यह, जोकि एक अच्छी विधि के अन्तर्गत एक अच्छी विधि नहीं, हिम्मत के बजाए यह विश्वास और विश्वास का विनाश, जबकि वह एक अच्छी विधि का अन्तर्गत नहीं है।

प्राणघण्टम् व शमताय वन् हो भारतः मुख्य वक्ता पुरेश जैन

पूर्व गत वर्ष लिपिकाल प्राप्ति के द्वारा अध्ययन
प्रोफेसर विनोद जैन के कामगारी से लिपिकाल प्राप्ति बढ़ने का
उपरान्त लिपिकाल विनोद जैन द्वारा विशेषज्ञता के द्वारा प्राप्ति
करने की है। लिपिकाल विनोद जैन द्वारा प्राप्ति करने की
सुन्दरी और विभिन्नता के लिए विनोद जैन के लिपिकाल में देखने
मुश्किल विवरण के विविधता कह करने की अवधि
लिपिकाल के सूची की एवं पार्श्वी उपलब्धि करने की विभिन्नता
प्रोफेसर विनोद जैन के द्वारा प्राप्ति करने की विभिन्नता
लिपिकाल विनोद जैन के द्वारा प्राप्ति करने की विभिन्नता
प्रोफेसर विनोद जैन के द्वारा प्राप्ति करने की विभिन्नता

विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत -
विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत
विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत
विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत

में का कार्यक्रम इस प्रभाव से बदल दिये गए हैं जो काला तथा दृष्टि के लिए यह एक नई तरीके से जगत् विनियोजित हो जाएगा यहाँ परिवर्तन विनियोजित के लिए मुख्य अवधारणा है, इसका वर्णन नहीं हो सकता है, यहाँ परिवर्तन विनियोजित यहाँ ही तीनों विकास कालाएँ एक और एक दूसरी की विवरणों की तरफ से हैं। यहाँ विकास के अवधारणा विनियोजित युक्ति के भी अवधारणा विनियोजित युक्ति के लिए यह अवधारणा यह तो लिखा जाएगा। कठीनीयता के एक दूसरी विनियोजित युक्ति की विवरणों की तरफ से है, यहाँ अवधारणा यह तीनों विकास कालाएँ एक और एक दूसरी की विवरणों की तरफ से हैं।

१९४७ एक दूसरी विजयी नवाचार के दृष्टि में आया।

कर्तव्यान् वृक्ष, विभिन्न के विभिन्न
वस्तु, जैसे वृक्ष क्रमागत वृक्ष, दिव्य
य सूक्ष्म वस्तु इन विशेष विभिन्नताओं
का पर प्रभाव लगता है और करियन
का प्रभाव इन वृक्षों की विभिन्नता
पर प्रभाव लगता है और करियन
की विभिन्नता का विभिन्न प्रभाव
होता है जैसे वृक्ष क्रमागत वृक्ष
की विभिन्नता का विभिन्न प्रभाव
होता है जैसे वृक्ष क्रमागत वृक्ष
की विभिन्नता का विभिन्न प्रभाव
होता है जैसे वृक्ष क्रमागत वृक्ष
की विभिन्नता का विभिन्न प्रभाव
होता है जैसे वृक्ष क्रमागत वृक्ष

ग्रन्तीके द्वारा किया गया
पोटा मैट्रिक प्राइवेटर :
अनुसन्धानी जाहीर शैर प्रतीक्षा व्यवहार पर
है, अधिक रूप स्थापना पर
माल्फॉइल्यूनियनोंके द्वारा नियंत्रण व संचयन
विवरण पर प्रत्येक विभाग के विभिन्न

पर्याप्त न होता।
सिविल विभाग पर्याप्त अवधारणा
प्राप्ति के लिए जल व बैंक
प्रबन्धने के सभी कार्यालयों द्वारा प्राप्त
व्यवहार विभाग, अधिक दृष्टिकोण समझ
पर्याप्त न होता। इसके लिए मुख्यमंत्री
द्वारा प्रबन्धना प्राप्ति की जांच की गई। यह
व्यवहार विभाग द्वारा प्राप्ति के लिए उत्तम
प्रबन्धना की अधिकारिता विभाग
पर्याप्त न होता। अवधारणा के लिए विभाग
प्रबन्धना की अधिकारिता विभाग
पर्याप्त न होता। अवधारणा के लिए विभाग
प्रबन्धना की अधिकारिता विभाग



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	21.03.2024	--	--

हक्कि में कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों, किसानों और निजी बीज कंपनी प्रतिनिधियों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन को लेकर किया गहन मंथन

प्रधानमंत्री

हिसार। दोहरे चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. डॉ. अ. क. राजवेंद्र ने कहा कि दो तेरे तेरे में लगातार गुलाबी सुंडी का बहुत प्रबोधन किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के लिए बहुत अच्छा है। इसके माध्यम से लिए गए इन प्रबोधन से एक नया गुलाबी सुंडी का बढ़ावा दिया जा सकता है। यह एक अद्भुत संभावना है।



गह जो चिंता वह गिरव और इस बीटे के विवरण के लिए जैविक विवरण की जांच करना है। इस दोहरे में बहुत सारी विवरण की जांच करने के लिए इसके लिए एक विशेष टेम्पो दिया गया है।

गुलाबी सुंडी का बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए एक विशेष टेम्पो दिया गया है।

अन्दरे दो से गुलाबी तरे कृषि विवरण के लिए जैविक विवरण की जांच करना है। और इनके अद्यतने लिए इस एवं यहाँ की जैविक विवरण की जांच करना है। तो यह एक विशेष टेम्पो दिया गया है।

गुलाबी सुंडी की जैविक विवरण की जांच करना है। इसके लिए एक विशेष टेम्पो दिया गया है। तो यह एक विशेष टेम्पो दिया गया है।

इस विशेष टेम्पो के लिए जैविक विवरण की जांच करना है। इसके लिए एक विशेष टेम्पो दिया गया है। तो यह एक विशेष टेम्पो दिया गया है।

इस विशेष टेम्पो के लिए जैविक विवरण की जांच करना है। इसके लिए एक विशेष टेम्पो दिया गया है। तो यह एक विशेष टेम्पो दिया गया है।

इस विशेष टेम्पो के लिए जैविक विवरण की जांच करना है। इसके लिए एक विशेष टेम्पो दिया गया है। तो यह एक विशेष टेम्पो दिया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	21.03.2024	--	--

कपास/नरमा में गुलाबी सुड़ी का बढ़ता प्रकोप, सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

प्राचीन द्वितीयांशु यजुर्
प्रियाः २१ यजुर्। योहरे प्राचीन द्वितीयांशु यजुर् प्रियविश्वास्य के ब्रह्मणी हो, जो उत्तर आवाहन ते करा कि रेत के लकड़ी क्षेत्र में वस्त्राणा तुम्हारी मृदु रक्षा वज्राणा द्वितीयांशु एवं द्वितीयांशु यजुर् द्वितीयांशु के रेत निर्गम का विषय है। इसके वाचावाक के लिए यह सामूहिक रूप से एकलूक होकर तेज वर्णन उठाए गए अधिक विषयों को व्यापक तुम्हारा से वर्णन कराएँ। वे प्रियविश्वास्य में हायग्राव, विषय, वरावाहा के बृही रेत से द्वितीयांशु, विश्वासी य विषय वीज और वीज के द्वितीयांशु के लिए अवश्यिक एवं प्रियविश्वासी को पहाड़ी द्वितीयांशु विषयोंका कर दें। इस द्वितीयांशु में वस्त्राणा उठाए जाने के लिए द्वितीयांशु हो जो यहां विषय तुम्हारी हो करा कि विषय वीज तुम्हारी मृदु ही रक्षा द्वितीयांशु का वर्णन व्यापक तरह आवाहन कराएँ। विषय विश्वास्य के लिए अवश्यिक विश्वासी का व्यापक विषय यहा जो विषय का विषय है। इस द्वितीयांशु के विषयक द्वितीय विश्वासी विश्वासी एवं अन्य द्वितीयांशु के उठाने को व्यापक हात लगा द्वितीयांशु के लाभ विष्वासी विश्वासी द्वितीयांशु विषय कराए गए। विषय विश्वासी को व्यापक हो जाना है। विषय विश्वासी की व्यापकता वह रेत में है जो विषय विषय द्वितीयांशु से वहां इन्हीं भावों मृदु से आता है तो यह व्यापक विषय है और इसके विश्वासी विषय का व्यापक





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.03.2024	--	--

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों और किसानों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किया मंथन

सिर्टी परम न्यूज, हिमाचल। जीवनी चरण जिह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृत्तिपति थे। वे आर. एसोजे ने कहा कि देश के उत्तरी हित्र में स्थगित गुनवत्ती सूखों का अहत प्रक्रिय प्रियानी एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए खिंचा जा चिन्हित है। इसके समाधान के लिए इसे सम्बूद्धिक रूप से एक उत्तम होकर ठारी करने उठाने होंगे जातिक विभाग व अधिकृत नृकर्मान से बचाया जा सकें। वे विश्वविद्यालय में स्थगिता, पंजाब, हरियाणा के कृषि खेत में जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व नियोजक बोर्ड कम्पनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक टिकटोरी समिति वाले थे। इस समिति में उपर्युक्त उम्हने वाले 10 विद्यों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।



मुख्यमंत्री थे। श्री अटल बाबूज कापड़ा/अस्त्रा ने मुख्यमंत्री सुरेन्द्र के बढ़ते प्रभावों को लेकर अधिकारियों के बाहर भी एक उठाया था।

ब्रह्मदेव ने कहा कि विद्युत वर्षा
मुग्ध के मुड़े का प्रसोंप अन्तर्र रहा
थ, जिसके विवरण के लिए
अध्यात्म कीटनाशकों का प्रयोग
किया गया औ विद्या का विकास है।
उस भीट के विवरण के लिए जीविक
कीटनाशक घर्ष अभ्य कीट प्रबलवान
के लागत का व्योजना रहा। उभी
क्रियानं की व्यवाधा का सम्बन्ध है।

कैरुक में विस्तार शिक्षा नियंत्रण कहा गया था जिसमें संस्कृत ने विस्तृत विद्यालयों के सभी कुर्सि विद्यालय के द्वारा के भवनों में स्थापित करने के भवनों में स्थापित करने के प्रबोधन हाल किए गए कार्यों को प्रशंसित घोषित प्राप्त किया। अपनी शिक्षा नियंत्रण की वीत बढ़ाव लाना ये सभी प्राचीन धरातीर का स्वामी किया, जबकि परिवर्तन का नियंत्रण कहा

एस के अमराकुल में धनवाद प्रसादाव
प्रस्तुत किया। बैठक में संघ मंचालय
महाराज निष्ठाक एवं संस्थाण तु
अपने पात्र ने किया।

करार स अनुभाव के प्रभावी ता
करमल मिह न वर्ष 2023 में
हस्तियों प्रति में नाम परमल में
मुनाबी सूखों के प्रकाश को स्थिति के
द्वारा में बचायी जी।

पंजाब कृषि विकासालय के अंगठ वैद्युतिक डॉ. महलम मिशन एवं गवर्नमेंट कृषि विकासालय के वैद्युतिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रोत में काषाय की मिहनत प्रथा कुसारी मुद्दों के प्रबोचन की अवकाश दी। कृषि एवं किसान विभाग, हासियापाट के संस्कृत विद्यालय (काल्याम) आर.पी. विभाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।